वृक्षच्छेदन विधि

वृक्ष छेदन मुहुर्त

मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, हस्त, मूल, दो उत्तरा, स्वाती, श्रवण - नक्षत्रमें कृष्णपक्षमें छेदन।

वृक्षपूजन -

ॐ ओषधी: प्रतिमोदध्वं० ओषधयः समवदन्त० मंत्र से जलसेचन, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पण करें। विशेषबलि अर्पण करें। वस्त्र से आच्छादित-वेष्टित करें। विविध वर्णके तंतु से वेष्टित करें।

प्रार्थना -

यानीह वृक्षे भूतानि तेभ्य: स्वस्ति नमोऽस्तु वः ।

उपहारं गृहीत्वेमं क्रियतां वासपर्ययः ॥

प्रार्थयित्वा वरयते स्वस्ति तेऽस्तु नगोत्तम ॥

गृहार्थं वान्यकार्यार्थं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।

परमान्नमोदकौदन दधि पल्लोलादिभि: दशैः॥

मद्यै: कुसुमधूपैश्च गन्धैश्चैव तरुं पुन: ।

सुरपितृपिशाच राक्षसभुजगासुर विनायकाच।

गृह्णतु मत्प्रयुक्तां वृक्षं संस्पृश्य ब्रूयात्॥

यानीह भूतानि वसंति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ।

अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु क्षमन्तु तानद्य नमोऽस्तु तेभ्यः॥

यह प्रार्थना करते आचार्य एवं यजमान वृक्ष के पास रात्रि शयन करें। उपरि उक्त श्लोक अनुसार क्रिया करें । वृक्ष के निवासियों को अन्यत्र जाने की प्रार्थनाकरें । पश्चात् दूसरे दिन नित्यकर्म पश्चात् वृक्षको पानी देकर, कुठार पर घृत एवं मधु का लेप करें। पश्चात् पूर्व-उत्तर दिशामें प्रदक्षिणा क्रम से छेदन करें । गोलाकार छेदन करते रहें।

वृक्ष पतन दिशा का शुभाशुभ फल

पूर्व-धनधान्य पूरित गृह,

अग्नि-अग्निदाह,

पश्चिम-पशुवृद्धि,

वायव्य-चौरभय,

उत्तर-धनागम,

ईशान-अति उत्तम फल